राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन



-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

DEV SANSKRITI VISWAVIDHYALAYA
HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org



राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन

उत्तर प्रदेश के अंग्रेज गवर्नर लखनऊ से प्रयाग आकर इलाहाबाद के गवर्नमेंट हाउस में कुछ दिन तक निवास करने वाले थे। यह शानदार इमारत उस समय बनाई गई थी, जब इस प्रांत की राजधानी इलाहाबाद ही थी और गवर्नर वहाँ स्थाई रूप से रहा करते थे। पर राजधानी के लखनऊ स्थानांतरित हो जाने से यह 'लाट साहब की कोठी' प्रायः खाली पड़ी रहती थी। यद्यपि पुलिस का एक गारद अब भी उसकी रखवाली के लिये तैनात था। इसलिए साल में एकाध महीने के लिये जब गवर्नर उसमें आकर ठहरते थे, तो वहाँ बड़ी तैयारियाँ होतीं और हर चीज की सफाई की जाती। उसमें एक तालाब या बड़ा कुंड भी था, जो वैसे तो खाली पड़ा रहता था, पर आवश्यकता पड़ने पर नल के पानी से भर दिया जाता था। एक वर्ष जिस समय 'गवर्नर साहब' इलाहाबाद पधारे, वहाँ पानी का बड़ा अभाव था। वर्षा की कमी से जमुना नदी की धारा क्षीण पड़ गई थी और नलों में इतना पानी भी कठिनता से आता था, जिससे नगर-निवासी अपनी प्यास बुझा सकें। सार्वजनिक नलों के सामने सदा बर्तन हाथ में लिये स्त्री, पुरुष और बच्चों की भीड़ लगी रहती थी और पानी के लिये प्रायः कहा-सुनी और झगड़े होते रहते थे।

ऐसे जल-संकट के समय गवर्नमेंट हाउस के तालाब में हजारों मन पानी केवल एक व्यक्ति के स्नान के लिये बर्बाद कर देना, निश्चय ही घोर हृदयहीनता का परिचायक था। पर लखनऊ के आजीवन रंगरेलियाँ मनाने वाले 'नवाबों के उत्तराधिकारी' गवर्नर साहब को गरीब भारतवासियों के प्यासे रहने की क्या चिंता हो सकती थी ? जब गवर्नमेंट हाउस में पदार्पण करने पर उन्होंने देखा कि तालाब सूखा ही पड़ा है, तो उनके दिमाग का पारा कुछ ऊँचा चला गया और उन्होंने अपने प्राइवेट सेक्रेटरी को म्युनिसपैलिटी के चेयरमेन के पास यह जवाब-तलब करने के लिए भेजा कि इस प्रकार की 'गलती' क्यों हुई और अब तालाब को तुरंत भरा जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उस युग में अंग्रेज गवर्नर का पद 'भगवान् के पद' से कुछ ही कम समझा जाता था और अधिकांश भारतीय पदाधिकारी उनकी अप्रसन्नता का ख्याल करके काँप उठते थे। पर अंग्रेज गवर्नर के अंग्रेज प्राइवेट सेक्रेटरी के आश्चर्य का उस समय ठिकाना न रहा, जब इलाहाबाद म्युनिसपल बोर्ड के चेयरमैन ने उनको टका-सा जवाब दे दिया कि 'नगर की जनता को प्यासा मारकर, गवर्नर साहब के स्नान के लिये नल के पानी से तालाब नहीं भरा जा सकता।' प्राइवेट सेक्रेटरी ने अपना अंग्रेजी रौब-दाब दिखाकर काम निकालना चाहा, पर चेयरमैन की दृढ़ता के सामने उसकी एक भी न चली।

उस युग में समस्त प्रांत के कर्ता-धर्ता गवर्नर के आराम की उपेक्षा करके गरीब जनता के कष्टों और अभावों का ख्याल रखने वाले और अपने आत्म-बल से अंग्रेज अधिकारी को फटकार देने वाले चेयरमैन थे—राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन। वे उन थोड़े से भारतवासियों में से थे, जो उस अंग्रेज-प्रधान युग में भी अपने जातीय गौरव की रक्षा के लिये तत्पर रहते थे। वे उन कर्तव्यपरायण लोगों में से थे, जो अपने वास्तविक उत्तरदायित्व का निर्वाह करने के लिये न पदवी की परवाह करते थे, न धन की और न सुख-दुःख की। जनता के मध्य अन्य लोगों की तरह ही रहने के कारण, वे अच्छी तरह जानते थे कि पानी की कमी के कारण नागरिकों को कितनी असुविधा सहन करनी पड़ रही है और गरीबों की स्थिति कैसी कष्टजनक हो रही है ? ऐसे समय में एक व्यक्ति ने मनोविनोद के लिये हजारों मन पेय-जल को तालाब के भरने में बर्बाद करना नैतिकता की दृष्टि से निस्संदेह एक अक्षम्य अपराध था। यदि और कोई सरकारी कृपा का भिखारी 'रायबहादुर' या 'रायसाहब' चेयरमैन होता, तो वह सिर के बल चलकर गवर्नर की आज्ञा का पालन करता। पर खद्दर का फटा कुरता और टाट का जूता पहनने वाले टंडन जी इन बातों को कैसे महत्त्व दे सकते थे ? उन्होंने गवर्नर की प्रसन्नता के बजाय सेवा-धर्म के पालन को ही उच्च माना।

उसी 'चेयरमैन' के जमाने की दूसरी घटना भी उनकी महानता पर प्रकाश डालने वाली है। अपने पद का भार सँभालने के कुछ ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समय बाद म्युनिसपैलिटी का हिसाब-किताब देखने पर उनको जान पड़ा कि नल के टैक्स का कई हजार रुपया इलाहाबाद सैनिक छावनी के अधिकारियों के नाम वसूल होने को पड़ा है। यद्यपि टैक्स का बिल नियमित रूप से छावनी के बड़े अफसर के पास भेजा जाता था, पर वे उसकी तरफ ध्यान ही नहीं देते थे। इसके पहले अन्य चेयरमैनों को भी इसका पता था, पर फौजी अंग्रेज अफसर से कड़ा तकाजा करने का उनका साहस न होता था। टंडन जी ने स्थिति को समझकर एक के बाद एक कई पत्र तकाजे के उनको भिजवाये और जब उन्होंने उस पर कुछ ध्यान न दिया, तब आपने उनको नोटिस दिया कि 'यदि एक सप्ताह के भीतर रुपया जमा नहीं किया गया तो फौजी क्षेत्र में पानी का जाना रोक दिया जाएगा।' फौजी अफसर ने इसको भी कोरी धमकी समझा और टैक्स की रकम अदा न की। बस टंडन जी ने पानी को रोकने की आज्ञा दे दी और एक ही दिन में साहब लोगों के बंगलों में 'हाय-तोबा' मच गई। विवश होकर अफसर साहब दौड़े हुए आये और बकाया रकम का एक भाग जमा करके तथा शेष को शीघ्र ही भेजने का वायदा करके, टंडन जी से पानी को खोल देने की प्रार्थना की। इस प्रकार उन्होंने निरंकुश फौजी अधिकारियों से सार्वजनिक धन की एक बड़ी रकम वसूल करके उसे जनहितकारी कार्यों में लगाया।

आरंभिक जीवन—

श्री पुरुषोत्तमदास टंडन (सन् १८८१-१९६२) का जन्म इलाहाबाद के एक साधारण परिवार में हुआ था। आपके पिता श्री सालिगराम एकाउंटेंट जनरल के दफ्तर में नौकरी करते थे और उस समय की परिस्थितियों में उनकी आर्थिक दशा सामान्य थी। टंडन जी अपने स्कूली-जीवन में एक बुद्धिमान् विद्यार्थी माने जाते थे, पर वे खिलाड़ी भी एक नंबर के थे। साथ ही उनमें निर्भीकता भी कूट-कूट कर भरी थी। दस वर्ष की आयु में आप एक दिन सिविल लाइन की तरफ घूमने चले गये। वहाँ कुछ अंग्रेज लड़कों से कहा-सुनी हो गई और इन्होंने उनको खूब पीटा। इतने में और कई अंग्रेज लड़के आ गए। इनके सब साथी भागने को तैयार हो गए, पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ये फिर भी साहसपूर्वक उनसे भिड़ गये और काफी मार खाने के बाद भी अंत में उनको भगाकर ही छोड़ा। इस प्रकार वे बाल्यावस्था से ही अंग्रेजों से निडर रहने का अभ्यास कर चुके थे।

कॉलेज में भी आपने इस निर्भीकता का परिचय दिया। जैसा कहा जा चुका है कि आप बड़े खिलाड़ी थे और कॉलेज की खेल कमेटी के सेक्रेटरी तथा क्रिकेट टीम के कप्तान थे। एक बार कॉलेज में प्रांतीय टूर्नामेंट (खेल-प्रतियोगिता) हो रहा था। उसके प्रबंधक मि० हिल ने, जो कॉलेज के ही एक प्रोफेसर थे, प्रबंध करने के लिए पुलिस बुला ली। यह बात विद्यार्थियों को नापसंद हुई, क्योंकि वे इसे अपनी अप्रतिष्ठा समझते थे। खेल के समय किसी बालक को पुलिस के एक सिपाही ने धक्का देकर निकाल दिया। टंडन जी ने पुलिस वाले को इस व्यवहार के लिए फटकारा, तो बात बढ़ गई और मामला हिल साहब के सामने पहुँचा। साथियों ने टंडन जी से कहा कि वे घर चले जायें, जिससे हिल साहब से झगड़ा होने की नौबत न आवे। पर उन्होंने अपने उत्तरदायित्व से पीछे हटना स्वीकार न किया और हिल साहब के पास जाकर सारी घटना स्वयं ही सुना दी। हिल साहब ने निर्णय किया कि 'हमको इस मामले में कुछ कहना नहीं है, अगर पुलिस चाहे तो इनको हवालात भेज सकती है।' पर टंडन जी की तेजस्विता के सामने पुलिस वालों को दब जाना पड़ा। दूसरे दिन इसी घटना को लेकर कॉलेज के ३०० विद्यार्थियों ने हड़ताल कर दी और टूर्नामेंट में भाग लेना छोड़ दिया। इसके परिणामस्वरूप टंडन जी को एक वर्ष के लिए कॉलेज से निकाल दिया गया और उतने समय तक इनकी पढ़ाई रुकी रही।

ठीक ऐसी ही घटना देशभक्त सुभाष बाबू के संबंध में हुई थी। उन्होंने भी अंग्रेज प्रोफेसरों के अनुचित व्यवहार के विरोध में कॉलेज में हड़ताल करा दी थी, जिसके लिए उनको निकाल दिया गया और दो वर्ष बाद बड़ी कठिनाई से अन्य कॉलेज में प्रवेश मिल सका। वास्तव में यह इन महापुरुषों की राष्ट्रीय सम्मान की भावना का चिह्न था कि वे अंग्रेजों द्वारा भारतीयता की जान-बूझकर उपेक्षा किया जाना तनिक भी सहन नहीं कर सकते थे और किसी तरह की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हानि की परवाह न करके विरोध के लिए तैयार हो जाते थे। खेद है कि आज वैसी राष्ट्रीयता की भावना बहुत थोड़े लोगों में दिखाई पड़ती है, अन्यथा प्रायः लोग व्यक्तिगत लाभ के सामने इस तरफ ध्यान ही नहीं देते। ऐसे लोग कभी जनता के सम्मानास्पद होने की आशा नहीं कर सकते।

टंडन जी अपनी इस मनोवृत्ति का परिचय देने से कभी पीछे नहीं हटे। जिस समय वे चेयरमैन थे, इंग्लैंड से प्रिंस ऑफ वेल्स भारत-यात्रा के लिए आए। इलाहाबाद के म्युनिसपल बोर्ड ने भी उनको अभिनंदन पत्र दिया। नियमानुसार वह चेयरमैन द्वारा ही पढ़ा जाना चाहिए था। पर टंडन जी ने इस बात को, जिसके लिए अन्य लाखों लोग लालायित होते, अपने सिद्धांत के विरुद्ध समझा और उसे पढ़ने से इनकार कर दिया। बोर्ड के वाइस चेयरमैन (उपाध्यक्ष) ने उसे पढ़कर सुनाया।

त्याग और कष्ट-सहन—

देश-सेवा और मातृभाषा-सेवा के क्षेत्र में टंडन जी के जमाने में और भी अनेक सज्जन प्रशंसनीय कार्य कर रहे थे, पर त्याग और निस्पृहता की मात्रा उनमें जितनी अधिक पाई जाती थी, उतनी गांधी जी के अतिरिक्त और किसी में देखने में नहीं आई। यद्यपि वे इलाहाबाद हाईकोर्ट के एक अच्छे वकील थे और यदि अन्य वकीलों की तरह उसी पेशे में पूरी शक्ति लगाकर काम करते तो सहज में लखपति बन सकते थे। पर उनका ध्यान वकालात की अपेक्षा सार्वजनिक सेवा के कार्यों में अधिक रहता था। यही कारण था कि उनकी आर्थिक स्थिति सदैव साधारण ही बनी रही और बीच-बीच में ऐसे भी अवसर आये, जबकि घर में अच्छी तरह रोटी मिलना भी कठिन हो गया। सन् १९१४ में माननीय मालवीय जी के कहने से आपने नाभा राज्य में मंत्री पद पर काम करना स्वीकार कर लिया, पर जब देखा कि उसके कारण उनको सार्वजनिक सेवा-कार्य करने का समय नहीं मिलता और न हिंदी साहित्य-सम्मेलन की वृद्धि के लिये उचित प्रयत्न कर सकते हैं, तो आपने उस उच्च पद को सब लोगों और नाभा नरेश के अत्यधिक आग्रह करने पर भी छोड़ दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जब गांधी जी ने भारत में असहयोग आंदोलन चलाया और लोगों से सरकारी अदालतों, नौकरियाँ और स्कूल आदि छोड़ने को कहा, तो आपने बिना किसी संकोच के वकालत छोड़ दी और इस बात की भी चिंता न की, कि फिर घर का काम कैसे चलेगा ? यद्यपि श्री जमनालाल आदि धनी कांग्रेसी नेताओं ने अन्य कार्यकर्ताओं के समान इनको भी आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव किया, पर आपने सदा यही उत्तर दिया कि मैं अपने सेवा-कार्यों के लिए इस प्रकार धन लेना कभी पसंद नहीं कर सकता।

जब लाला लाजपत राय को उनके आर्थिक कष्टों का पता चला कि कभी-कभी उनके घर में रोटी बनने की भी नौबत नहीं आती, तो वे उनको अपने साथ लाहौर ले गये और 'पंजाब नेशनल बैंक' में सेक्रेटरी के पद पर नियुक्त करा दिया। सन् १६२८ में लाला जी की मृत्यु के पश्चात् आपको ही उनके 'लोक सेवक मंडल' का अध्यक्ष बनाया गया। पहले तो उन्होंने इस पद को स्वीकार करने से इनकार किया, क्योंकि इसके अध्यक्ष को अपनी समस्त कमाई तथा जीवन के अंत तक समस्त समय मंडल के कार्य में ही व्यय करने की प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी। पर जब महात्मा गांधी ने भी उनसे इस पद को स्वीकार कर लेने का आग्रह किया और घर वालों ने भी परिस्थिति को समझ कर अनुमति दे दी, तो आपको उसे स्वीकार करना ही पड़ा।

किसान संगठन—

आप किसान संगठन का कार्य असहयोग आंदोलन से भी पहले से कर रहे थे। पर बाद में गांधी जी के कार्यक्रम में भाग लेने के कारण वह ढीला पड़ गया था। सन् १६२६ में आपने उसी कार्य को फिर आरंभ करने का निश्चय किया और पंजाब नेशनल बैंक की नौकरी छोड़कर इलाहाबाद चले आये। यहाँ आपने जमींदारी-प्रथा के उन्मूलन और भूमि पर किसानों का अधिकार होने का आंदोलन उठाया। इसके साथ ही कांग्रेस के संगठन का कार्य भी करते जाते थे। जब आप इस कार्य के लिये काशी के श्री शिवप्रसाद गुप्त और आचार्य नरेंद्र देव के साथ बस्ती जिले में गये, तो वहाँ के कलक्टर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ने इन पर निषेधाज्ञा लगाकर जिले से बाहर चले जाने का आदेश दे दिया। जब इस आदेश का उल्लंघन किया गया, तो तीनों गिरफ्तार कर लिये गये और प्रत्येक को तीन-तीन सप्ताह की सजा दी गई। वहाँ से छूटने पर फिर गांधी जी के नमक सत्याग्रह में सम्मिलित हो गये और उत्तर प्रदेश के कांग्रेस के अध्यक्ष के पद पर कार्य करते हुए आपको जेल जाना पड़ा।

विधान सभा के अध्यक्ष—

सन् १९३७ में जब कांग्रेस के चुनावों में भाग लिया और सभी प्रांतों में कांग्रेस सरकारें स्थापित हो गई तो टंडन जी उत्तर प्रदेश की विधान सभा के अध्यक्ष चुने गये। पर इस पद को स्वीकार करते हुए आपने यह शर्त पेश की, कि वे इस पद का कार्य करते हुए भी कौंसिलों के बाहर अपना राजनीतिक कार्य बंद नहीं करेंगे। इससे कुछ लोगों को आशंका हुई कि आप अध्यक्ष का कार्य निष्पक्ष रूप से न कर सकेंगे, जिसकी कि उनसे आशा की जाती है। आपने उत्तर दिया कि "कुछ सदस्यों की यह आशंका सर्वथा निर्मूल है। मैं बाहर चाहे जिस दल का कार्य करता रहूँ, पर विधान-सभा के भीतर सदैव तमाम पार्टियों के सदस्यों के साथ एक-सा ही बर्ताव करूँगा। यदि कौंसिल के सदस्य मेरे कार्य से असंतुष्ट होकर अविश्वास करने लगे तो मैं इस पद को त्यागने में जरा भी विलंब न करूँगा।"

टंडन जी के चरित्र की दृढ़ता, उनकी सत्यवादिता तथा त्याग-वृत्ति पर सभी दलों के व्यक्तियों को इतनी अधिक आस्था थी कि उनके कथन का प्रतिवाद करने का साहस कोई न कर सका। उन दिनों श्री वल्लभ भाई पटेल बंबई व्यवस्थापिका सभा के अध्यक्ष थे और उनकी निष्पक्ष नीति और कार्य-संचालन की सर्वत्र सराहना की जाती थी। उनका एक प्रसिद्ध सिद्धांत यह था कि "व्यवस्थापिका सभा के अध्यक्षों को किसी राजनीतिक दल से संबंध न रखना चाहिए।" यद्यपि टंडन जी ने इस सिद्धांत के विपरीत सार्वजनिक रूप से कांग्रेस का कार्य करते रहने की घोषणा कर दी थी, पर उनके दो-ढाई वर्ष के अध्यक्षता काल से एक भी ऐसी बात नहीं हुई, जिस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर कोई अंगुली उठा सके। यह थी उनकी सत्यवृत्ति और आत्मबल की शक्ति।

हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना—

यद्यपि टंडन जी का नाम हिंदी-लेखक की हैसियत से प्रसिद्ध नहीं है और न उन्होंने फुटकर लेखों और कुछ निबंधों के अतिरिक्त कोई विशेष पुस्तक लिखी है। पर हिंदी-संसार में उनके नाम की जितनी धाक थी और उनको जितना सम्मान प्राप्त था, उसका अन्य उदाहरण मिलना कठिन है। वे आरंभ से ही मातृ-भाषा के अनन्य भक्त थे और स्वर्गीय बालकृष्ण भट्ट के 'हिंदी प्रदीप' तथा मालवीय जी के 'अभ्युदय' में बराबर लेख भी देते रहते थे। 'अभ्युदय' के तो वे एक वर्ष तक संपादक भी रहे थे। पर राजनैतिक क्षेत्र के एक प्रमुख कार्यकर्ता होने के कारण उनको अपने विचार अधिकांश में भाषणों और व्याख्यानों के रूप में ही प्रकट करने पड़ते थे, जिससे ग्रंथ-लेखन का अवकाश ही नहीं रहता था।

पर इतना होने पर भी टंडन जी हिंदी लेखक-समुदाय के 'सिरमौर' माने जाते थे। उनके परिश्रम तथा प्रभाव से जितने अधिक हिंदी-लेखक बने तथा हिंदी-ग्रंथकर्ताओं ने सहायता प्राप्त की, उनकी गिनती कर सकना संभव नहीं। उन्होंने हिंदी-प्रचार की जड़ जमाने के लिये और हिंदी को भारतवर्ष की राष्ट्रीय भाषा बनाने के लिये इतना अधिक कार्य और स्वार्थ त्याग किया कि उनका नाम याद आते ही 'हिंदी-सेवा' का भाव मूर्तिमान् हो जाता है। उनकी चर्चा करते हुये बिहार के श्रेष्ठ साहित्यकार श्री शिवपूजन सहाय ने लिखा था—

"राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन हिंदी के लिए जिए और हिंदी के लिए मरे। हिंदी उनकी जिंदगी की साँस थी। हिंदी उनकी आँखों की ज्योति थी। हिंदी ही उनके मस्तिष्क की चिंतनधारा थी। हिंदी उनके रोम-रोम में रमी हुई थी। अपनी वाणी से उन्होंने हिंदी की अपूर्व सेवा की है। 'अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन' के वे सजग प्रहरी थे। आप उन्हें सम्मेलन का जनक, प्रतिपालक, संरक्षक कुछ भी कहें, उनके लिये उपयुक्त ही होगा। उन्होंने उसके माध्यम से हिंदी के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हितार्थ जो प्रचारात्मक और रचनात्मक कार्य किए और कराए, वे ऐतिहासिक महत्त्व के हैं। टंडन जी ने हिंदी-भाषा के कल्पवृक्ष को अपने एक-एक रक्त बिंदु से सींचकर, पल्लवित, पुष्पित और फलित किया। आज भी प्रत्येक सहृदय साहित्यिक व्यक्ति हिंदी हित-साधन में उनके आदर्श आत्मोत्सर्ग का स्मरण करके उनकी स्मृति में नत-मस्तक होता है। त्याग और तप की दृष्टि से वे हिंदी-जगत् के "महात्मा गांधी ही थे।"

निस्संदेह सच्चा सेवक और त्यागी वही है, जो अपने लक्ष्य के लिये सर्वस्व अर्पण कर दे। इसके बिना संसार में कोई महत्त्वपूर्ण कार्य पूरा नहीं हो सकता। जो लोग सार्वजनिक आंदोलनों में शौक या कुछ नाम कमाने के लिये भाग लेने लगते हैं अथवा जिनका उद्देश्य सार्वजनिक-संस्थाओं में घुसकर रुपया पैदा करना होता है, वे टंडन जी जैसे त्यागवीरों की महिमा को अनुभव नहीं कर सकते। वे उन व्यक्तियों में से थे, जिनकी प्रशंसा वे लोग भी करते हैं, जिनका उनके साथ मतभेद रहता है। यद्यपि टंडन जी और पं० जवाहर लाल नेहरू, एक ही नगर के निवासी होने और एक साथ कांग्रेस आंदोलन में सम्मिलित होने के कारण परस्पर घनिष्ठ मित्रता का भाव रखते थे, पर हिंदी-प्रचार के संबंध में उनमें कई बातों में मतभेद भी था। जहाँ टंडन जी ने सम्मेलन द्वारा संस्कृत शब्दों से युक्त भाषा को प्रधानता दी, वहाँ नेहरू जी ने हिंदी-उर्दू शब्दों के मेल-जोल से बनी हिंदुस्तानी भाषा के प्रयोग को देश की एकता की दृष्टि से अधिक हितकर माना। इसलिए इन दोनों नेताओं में अनेक बार वाद विवाद भी छिड़ जाता था। पर जब टंडन जी का स्वर्गवास हुआ तो नेहरू जी ने कहा—

"वह मेरे सबसे पुराने मित्रों और साथियों में से थे, जिनके प्रति मेरे दिल में बहुत प्यार और आदर था। उन्होंने देश के हित के लिये अपना पूरा जीवन लगाया, वे एकता तथा सादा जीवन के प्रतीक थे।"

हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन कराने के संबंध में भी उनका अनेक प्रसिद्ध पुरुषों से मतभेद और विरोध हुआ था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सन् १९२५ में ही कांग्रेस की विषय निर्धारिणी समिति में उन्होंने यह प्रस्ताव रखा था कि उसका सारा कार्य अंग्रेजी के बजाय 'हिंदुस्तानी' भाषा में किया जाय। चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य और पं० मोतीलाल नेहरू ने इसका विरोध किया, तो भी टंडन जी का प्रस्ताव पास हो गया और हिंदी को कांग्रेस के विधान में सम्मिलित कर लिया गया। इसी प्रकार हिंदी-शैली के संबंध में आपका महात्मा गांधी से भी मतभेद होता रहा। वे भी भारत की अनेक जातियों तथा मजहबों की एकता के ख्याल से उर्दू मिली-जुली भाषा का प्रचार करने के पक्ष में थे। जब हिंदी साहित्य सम्मेलन के कार्यकर्ताओं से उनका मत न मिल सका, तो उन्होंने सम्मेलन से त्याग-पत्र दे दिया। टंडन जी ने उसका उत्तर देते हुए लिखा—"यदि आप मेरे दृष्टिकोण से सहमत नहीं है और आपकी आत्मा कहती है कि सम्मेलन से अलग हो जाऊँ, तो आपसे अलग होने पर, बहुत खेद होने से भी मैं नतमस्तक होकर आपके निर्णय को स्वीकार करूँगा।"

उन दिनों गांधी जी की सम्मति से विरोध प्रकट करना सार्वजनिक जीवन की दृष्टि से एक घातक बात थी, क्योंकि समस्त राष्ट्र बहुत बड़े बहुमत से उनके पीछे चल रहा था। पर मातृभाषा की सेवा का प्रश्न उठने पर टंडन जी ने उस खतरे को भी उठा लिया। इसमें संदेह नहीं कि इसके पश्चात् राजनीतिक क्षेत्र में उनका प्रभाव कम हो गया, पर हिंदी-प्रचारकों के वे आराध्य बन गये। उनका यह कार्य किसी प्रकार की अंधश्रद्धा अथवा हठधर्मी के कारण न था, वरन् उनका हार्दिक विश्वास था कि भारतीय राष्ट्र की एकता और प्रगति के लिए हिंदी की अधिक से अधिक प्रगति और उसे सर्वोच्च पद दिया जाना अनिवार्य है। टंडन जी के इस दृष्टिकोण की विवेचना करते हुये हिंदी के प्रसिद्ध लेखक सेठ गोविंददास जी ने लिखा है—

"टंडन जी का लक्ष्य यही था कि देशवासियों के सतत् संघर्षों और बलिदानों की सार्थकता के रूप में जो स्वाधीनता हमें मिली है, उसके सभी सूत्रों को प्राप्त करके हम भारतीय आत्मा को सौंप दें। इन सूत्रों में उनका प्रधान सूत्र था—राष्ट्र-भाषा को राष्ट्र-भाषा के रूप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में व्यवहार में लाना। इसके साथ ही उनकी यह भी आकांक्षा रही कि भारत जिस श्रेष्ठ संस्कृति के कारण प्राचीन काल में संसार का सिरमौर रहा है, अपनी उस विरासत को अक्षुण्ण रखे। आज के प्रगतिशील युग में जब बड़े-बड़े राष्ट्र विज्ञान की घुड़-दौड़ में पड़े हैं। टंडन जी, विज्ञान और उसकी उपलब्धियों के प्रशंसक होते हुए भी, पुरातन और नूतन के सामंजस्य के समर्थक थे। हो सकता है, कुछ लोगों की दृष्टि में वह रूढ़िवादी हों, अथवा उनकी विचारधारा किसी वर्ग-विशेष के अनुयायियों की दृष्टि में फीकी जँचती हो, पर टंडन जी प्रगतिशीलता के नाम पर भारतीय संस्कृति की छाती पर योरोपीय ढंग का कोई नया वृक्षारोपण करने के विरुद्ध थे। उनकी मान्यता थी कि हमारा संस्कृति रूपी यह वट-वृक्ष, जिसकी शाखायें और टहनियाँ न केवल समस्त देश पर आच्छादित हैं, वरन् जिसकी शीतल वायु के झोंके बाहरी देशों तक भी सुरभि का वातावरण बनाये रखने में समर्थ हैं, उसका पोषण और अधिक विकास करने में ही हमारा कल्याण है।"

पर टंडन जी की इन भावनाओं में किसी भी प्रकार का द्वेष, अहंभाव अथवा स्वार्थ न था, वरन् वे एक-मात्र राष्ट्र हित को ही लक्ष्य में रखकर हिंदी को राज्य-भाषा घोषित कराने का आंदोलन कर रहे थे। इस संबंध में नवभारत टाइम्स (दिल्ली) के एक लेख में कहा गया है—

"वे राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के लिये सारे जीवन आंदोलन करते रहे और उसकी चिंता करते-करते ही उनका निधन हुआ। किसी अन्य भाषा से द्वेष रखकर या प्रांतीयता की सीमा में बँधकर उन्होंने हिंदी का आंदोलन ही नहीं किया, वरन् उनका सदा यह विश्वास रहा कि भारत में जन-संपर्क की भाषा होने और समस्त देशवासियों को एक कड़ी में पिरोने की शक्ति हिंदी में ही है। इसलिए वे केवल उत्तर प्रदेश में ही नहीं, वरन् समस्त भारत में इसके लिये आंदोलन करते रहे। वे सदैव कहा करते थे कि यदि कभी हिंदी के कारण राष्ट्र की एकता में बाधा उपस्थित हुई तो मैं सबसे पहले उसका विरोध करता दिखाई दूँगा।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इतना ही नहीं, जब भारतीय संविधान-सभा में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के संबंध में समस्त देश के प्रमुख व्यक्तियों के सम्मुख विचार किया गया, तो टंडन जी ने अपने उपयुक्त दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए कहा था—

"अत्यंत विनम्रतापूर्वक मैं यह निवेदन करता हूँ कि राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रश्न पर जनमत गणना की बात मुझे सहर्ष स्वीकार है। यदि कोई प्रांत हिंदी को स्वीकार नहीं करता तो मैं वहाँ के लोगों पर हिंदी को कभी नहीं लादूँगा। मैं तत्काल कहूँगा कि हिंदी को राष्ट्र-भाषा नहीं होना चाहिए। हिंदी को किसी प्रांत पर क्यों थोपा जाय ? यह तो प्रांतों को निर्णय करना है कि वे हिंदी को स्वीकार करते हैं या नहीं। वे चाहें तो अंग्रेजी को ही चालू रख सकते हैं अथवा वे 'एसपरैंटो' जैसी किसी कृत्रिम भाषा को अपना सकते हैं। यदि उनका ऐसा ही विचार हो तो मैं उसे स्वीकार कर लूँगा। किंतु जनता की इच्छा को जानने का कोई मार्ग तो निकालना चाहिए। यहाँ मेरे मित्र चाहे कुछ भी कहें, मुझे तो आशा है कि मद्रास की बहुसंख्यक जनता भी हिंदी को चाहेगी।"

शायद कुछ लोग यह समझते हों कि टंडन जी हिंदी-भाषी और उसके ज्ञाता होने के कारण ही उसका पक्षपात करते थे, तो यह शंका ठीक न होगी। उनका विद्यारंभ उस समय की परिस्थितियों के कारण उर्दू फारसी में ही हुआ था और उनके सर्वप्रथम 'गुरु' एक मुसलमान मौलवी ही थे, जिनका सम्मान और सहायता वे अंतिम समय तक करते रहे। उर्दू और फारसी साहित्य के वे अच्छे जानकार थे। इसी प्रकार अंग्रेजी और संस्कृत पर भी उनका पर्याप्त अधिकार था। पर भारतीय संस्कृति की विशेषता और यहाँ की जनता की मनोवृत्ति का अध्ययन करके ही वे हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में सर्वत्र प्रचलित करने के लिये प्रयत्नशील थे और उन्होंने अपना जीवन इसी कार्य में लगा दिया।

हिंदी प्रचार के लिये सच्ची लगन—

टंडन जी जो कुछ हिंदी के संबंध में कहते थे, उस पर उनकी हार्दिक आस्था कितनी अधिक थी—इसका एक उदाहरण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री ने अपने लेख में दिया है—"शास्त्री जी वर्षों से हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रमुख कार्यकर्ता हैं और उनको सदा टंडन जी के निकट संपर्क में रहने का अवसर मिला है। आयु और पदवी की निगाह से भी वे उनको अपना एक पूज्य गुरुजन मानते रहे हैं।"

"टंडन जी का हिंदी-प्रेम कितना अगाध था, इसका एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा। वे भारतीय संस्कृति के बहु-विश्रुत अनन्य जन-नायक थे और संस्कृत भाषा की उन्हें अच्छी जानकारी थी। भारतीय समाज में ऐसी कोई कुल-परंपरा नहीं, जिसमें संस्कृत भाषा के बिना काम चल सके। किंतु टंडन जी ने धार्मिक कृत्यों में भी हिंदी को प्रवेश दिलाने का सच्चा प्रयत्न किया था। उन्होंने अपने कई पुत्रों के विवाह हिंदी विवाह-पद्धति के अनुसार कराये थे। न केवल विधियों का ही, अपितु वैदिक मंत्रों का भी हिंदी अनुवाद कराया था।"

"उक्त प्रसंग उस समय हुआ, जब टंडन जी के पुत्र डॉ० आनंद कुमार का विवाह होने को था। टंडन जी के पास एक पुरानी हिंदी में अनुदित हस्तलिखित विवाह-पद्धति थी, जो असावधानी से कहीं रख देने के कारण दीमकों द्वारा चट की जा चुकी थी। परिवार के विवाह के अवसरों पर ही उसकी झाड़-पोंछ की जाती थी। टंडन जी ने जब देखा कि उससे काम चलना असंभव है और विवाह हिंदी में ही कराना है, तो उन्होंने मुझे यह काम सौंपा कि पुनः विवाह-पद्धति का मंत्रों सहित हिंदी अनुवाद यथाशीघ्र कर दूँ। मैंने कार्य आरंभ तो कर दिया किंतु जन्मना ब्राह्मण और वह भी संस्कृत परंपरा में पालित-पोषित होने के कारण इस कार्य में उचित मनोयोग न कर सका। परिणाम यह हुआ कि दो-तीन दिन यों ही बीत गये और काम नाम-मात्र को ही हुआ। जब विवाह के दस-बारह दिन ही रह गये तो मैं बुलाया गया। मैंने कुछ लज्जित होकर क्षमा-याचना के भाव से कहा—बाबूजी, वैदिक मंत्रों को तो आप उसी भाषा में रहने दीजिये, क्योंकि अनुवाद होने पर उनका प्रभाव नष्ट हो जायगा।"

"अपने कथन की पुष्टि में मैंने महावैयाकरण पाणिनि का एक वाक्य भी उपस्थित किया कि 'मंत्रों का वर्ण और स्वर विपर्यय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनर्थकारी होता है।' टंडन जी ने कहा—"भाषा तो विचारों को प्रकट करने का माध्यम है। जिसको हम समझेंगे ही नहीं, उसका भला हम पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? विवाह के मंत्रों में अनेक मांगलिक एवं समाज-हितकारी भावनायें व्यक्त की गई हैं। वे उस युग के लिये तो ठीक थीं, जब लोग उस भाषा को समझते थे, किंतु आज का समाज उससे बहुत दूर हो गया है। तोता के 'राम-राम' रटने की भाँति कोरे मंत्रों के पाठ से तो कोई फल न होगा। मुझे आश्चर्य है आप जैसे लोग भी ऐसी बात क्यों नहीं समझते ?"

अंत में उन्होंने श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री जी को अपने पास बैठाकर और स्वयं भी मिलकर पाँच-छह दिन में विवाह-पद्धति का अनुवाद कराया और बाद में उसे छपवाकर प्रकाशित भी करा दिया। उनके घर में सभी विवाह इसी के अनुसार किए गये। कई बार पुरोहित का कार्य उन्होंने स्वयं ही किया, पर किसी भी विघ्न-बाधा से विचलित होकर वे अपने ध्येय से हट न सके।

बात यही थी कि उनको हिंदी की शक्ति पर अटूट श्रद्धा थी और जैसे अनेक प्राचीन संतों ने पंडित पुरोहितों के विरोध के होते हुए भी अपनी संपूर्ण शक्ति देश भाषा द्वारा धर्म-प्रचार में लगा दी थी, उसी प्रकार टंडन जी ने युग-पुरुष गांधी के मतभेद को सहन करके हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर विराजमान कराने के लिये अपनी समस्त शक्ति और व्यक्तित्व तक अर्पित कर दिया। यदि उनके कार्य में किसी प्रकार के स्वार्थ की गंध तक होती या उन्होंने अपने आंदोलन द्वारा किसी तरह का निजी लाभ उठाया होता, तो गांधी जी से विपरीत दृष्टिकोण रखने पर सार्वजनिक क्षेत्र में उनका अस्तित्व निश्चय ही समाप्त हो जाता। पर वे तो शुद्ध सेवा-भाव और देश हित की दृष्टि से कार्य करने वाले थे, अतएव इस अग्नि-परीक्षा में होकर भी पहले से अधिक निर्मल रूप में जनता के सामने प्रकट हुए। उनके इन्हीं गुणों से प्रभावित होकर हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् गुलाबराय जी ने लिखा था—

"टंडन जी उन विरले व्यक्तियों में से थे, जिनकी कथनी और करनी में अंतर नहीं था। इस विषय में वे महात्मा गांधी और संत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विनोबा की श्रेणी में रखे जा सकते हैं। गांधी जी द्वारा प्रचारित 'एकादश व्रत' उनमें जीवित रूप में दिखाई देते थे—वह गृहस्थ होते हुए भी सच्चे त्यागी थे। जब वे प्रांतीय विधान सभा के अध्यक्ष थे, तो भी अपने कपड़े अपने हाथ से धोकर शारीरिक श्रम का नियम पालन करते थे। सुना है कि एक बार इन्कमटैक्स अफसर उनके हिसाब में कुछ भूल कर गये, जिससे उनको कम रुपया देना पड़ता था। टंडन जी ने भूल सुधारने के लिये स्वयं ही सब कागजात उनके पास पुनः भेज दिये। ऐसी सत्यनिष्ठा मुश्किल से ही देखने में आती है।"

"वह सत्य और स्वतंत्रता के अनन्य उपासक थे। सत्य के उद्घाटन में वह निर्भीक रहते थे। दूसरे के पक्ष को पूर्ण महत्त्व देते हुए भी वह अपने पक्ष को कुशल वकील की तरह ही नहीं, वरन् वीर सेनानायक की भाँति अग्रसर करने में आना-कानी नहीं करते थे। सच्चे देश-भक्त होते हुए उन्होंने निर्भीकतापूर्वक हिंदी का पक्ष लिया। वे हिंदी का समर्थन देश के सर्वोच्च हितों के लिये आवश्यक समझते थे। वे हिंदी को राष्ट्रीय एकता का मूलमंत्र मानते थे। इसी राष्ट्रीय-दृष्टि से उन्होंने कांग्रेस के अनेक प्रमुख नेताओं के विरुद्ध हिंदी-पक्ष बड़े जोर-शोर से सामने रखा। हिंदी के राष्ट्रभाषा घोषित हो जाने पर भी अंग्रेजी अंकों की 'पूँछ' बाकी रह गई थी, उसके लिये वह आजीवन विरोध प्रकट करते रहे।"

अन्य लोग भी उनके इस महान् गुण की पूर्ण कदर करते थे। सन् १९५१ में आप अखिल भारतीय कांग्रेस के ५६वें अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गये। यद्यपि राष्ट्रभाषा संबंधी मतभेद के कारण बड़ी-बड़ी शक्तियों ने इस चुनाव को रोकने का प्रयत्न किया। पर त्याग और तपस्या के बल पर वे पर्याप्त बहुमत से चुन ही लिये गये। उस अवसर पर भारत के सुप्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक पत्र 'हिंदुस्तान टाइम्स' ने उनकी प्रशस्ति में एक कॉलम का हिंदी लेख प्रकाशित किया। यह एक सर्वथा नई बात थी। पर अपने भाषा संबंधी विचारों के कारण जब आपने उस पद पर अन्य नेताओं के साथ मिलकर काम कर सकना कठिन देखा और स्वयं पं० जवाहरलाल जी ने कांग्रेस-कार्यकारिणी की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया, तो आपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अध्यक्ष पद को स्वेच्छापूर्वक छोड़ दिया। पर कांग्रेस को उन्होंने कभी नहीं त्यागा और जीवन के अंत तक जैसा अवसर आया, उसकी सेवा करते ही रहे। प्रत्येक सार्वजनिक कार्यकर्ता के लिये उनका यह उदाहरण अनुकरणीय है। जो लोग लोक-हितकारी या जातीय संस्थाओं में अपना कुछ विरोध होते देखकर हट ही नहीं जाते, वरन् उसके मुकाबले में दूसरी संस्था खड़ी करने का प्रयत्न करने लगते हैं या अन्य किसी प्रकार से उसे हानि पहुँचाने की चेष्टा करने लगते हैं, वे उपर्युक्त घटना से अवश्य ही शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

सत्य के सच्चे पुजारी—

वास्तव में टंडन जी का मूलमंत्र प्रत्येक अवस्था में सत्य का अनुसरण करना था। वे इस संबंध में "एकहि साधे सब सधै" सिद्धांत के अनुयायी थे। परिस्थिति और देश की आवश्यकतानुसार उनको विविध क्षेत्रों में काम करना पड़ता था, पर वे इस बात को सदा दृष्टिगोचर रखते थे कि कहीं भी उनसे अनुचित बात अथवा अन्याय का समर्थन न हो जाय। उनकी इस मनोवृत्ति का जो परिचय उनके एक अंतरंग सहकारी श्री वियोगी हरि ने दिया था, उसमें सार रूप में कहा गया था—

"जब टंडन जी के आदर्श जीवन की ओर हमारी दृष्टि जाती है तब उनके विविध लोक-सेवा कार्य हमारे सामने आ जाते हैं। वे कार्य हैं—राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और धार्मिक। अपनी-अपनी रुचि और दृष्टि के अनुसार हम उनके जीवन के किसी एक पहलू को लेते हैं और उसी को प्रधानता देने लगते हैं।

"जब जन-सेवा के सच्चे क्षेत्र से राजनीति वालों के पैर काँपा करते थे, उस समय टंडन जी ने उत्तर-प्रदेश के अन्याय-पीड़ित किसानों के अंदर प्राण फूँके थे, किसान सभाओं का मजबूत संगठन किया था। तत्कालीन शासकों ने भी इस संगठन को राजनीति का एक पुख्ता कदम माना था। समाज के उपेक्षित और आखिरी पंक्ति में खड़े हुये उस अंग ने, जिसे छूने से भी परहेज किया जाता है, टंडन जी में उनके प्रति स्नेह की भावना पाई थी। जो समाज और जो घराना अस्पृश्यता पर जोर देता था, उसे उन्होंने ललकारा,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसके खिलाफ विद्रोह किया। यहाँ तक कह दिया कि भगी को मल-मूत्र उठाने का पेशा सदा के लिये छोड़ देना चाहिए। अपना कमोड (शौच का पात्र) उन्होंने कई बार अपने हाथ से ही साफ किया। समाज में प्रचलित और भी अनेक कुरीतियों को मानने से उन्होंने स्वयं तो इनकार किया ही, दूसरों को भी उनके विरुद्ध विद्रोह खड़ा करने की सलाह दी।

"जहाँ कोई संकट आया, वहाँ टंडन जी तत्काल पहुँचे। उसके निवारण का कार्य स्वयं किया तथा अपने साथियों से भी कराया। उनको भारतीय संस्कृति का उद्धारक भी माना जाता है। 'राजर्षि' की उपाधि से उनको इसीलिये अलंकृत किया गया। हिंदू-संस्कृति में वह निस्संदेह गहरी रुचि रखते थे, पर अनेक लोग इसका आशय समझने में गलती कर बैठते थे। हिन्दू-धर्म की कुछ घिसी-पिटी मान्यताओं या परंपराओं पर विश्वास करना, इसी को बहुतेरे लोग 'संस्कृति' मानते हैं। टंडन जी ऐसे विश्वासों से बहुत दूर थे। जो कृति सम्यक् हो, सच्ची हो, समीचीन हो, सुंदर हो, उसी को वह भारतीय संस्कृति मानते थे। कई प्रशंसकों ने टंडन जी को धार्मिक पुरुष के रूप में भी देखा है। यह सही है कि उनके पिता राधास्वामी मत के एक प्रमुख अनुयायी थे, पर उनकी व्यापक दृष्टि पंथों और संप्रदायों से बहुत परे थी। सभी धर्मों की बुनियादी सच्चाइयों के प्रति उनके हृदय में पूरा आदरभाव था। अर्थहीन रूढ़ियों के वे कभी कायल नहीं थे।"

इस प्रकार वियोगी हरि जी ने टंडन जी के विविध जीवन-कार्यों पर दृष्टिपात करके यही निष्कर्ष निकाला है कि "टंडन जी की राजनीति, समाज-सेवा, सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ, साहित्य और हिंदी के प्रति गहन निष्ठा और उनकी सतत धर्मप्रियता, इन सभी के मूल में हम उनका एक ही लक्ष्य पाते हैं। वह लक्ष्य था—'सत्य' और उनकी साधना का मार्ग था—नैतिकता। इसी नीति का हाथ पकड़ कर टंडन जी ने सत्य तक पहुँचने का अनेक क्षेत्रों द्वारा प्रयास किया था।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खेद का विषय है कि आज इसी 'नैतिकता' को भूल जाने के कारण हमारे देश की इतनी दुर्दशा हो रही है। लोग 'भगवान्' का, 'धर्म' का, 'परलोक' का नाम तो दिन भर लेते रहते हैं, पर उनका व्यवहार, आचरण इससे बिल्कुल उलटा दिखाई पड़ता है। आप किसी भी पेशे या धंधे की जाँच कीजिए, उसमें 'ईमानदार' कहे जा सकने लायक आदमी ढूँढ़ने पर नाममात्र को ही मिलेंगे, बल्कि नौकरी में रिश्वत और भ्रष्टाचार, व्यापार में मोलभाव, मिलावट और कम तोलना-नापना, मजदूरी में जहाँ तक संभव हो ढीलेपन से काम करना, हरामखोरी करना ही आमतौर से दिखलाई पड़ते हैं। इन बातों के कारण अपने देश में ही पारस्परिक विश्वास का अभाव नहीं पाया जाता, वरन् विदेशों के निवासी भी यहाँ वालों की ईमानदारी पर संदेह करते हैं और उनसे व्यवहार करते समय बहुत चौकन्ने रहते हैं।

यह अनैतिकता अथवा बेईमानी की प्रवृत्ति हमारे जातीय-जीवन के लिए एक भयंकर अभिशाप की तरह है। खेद है कि किसी समय जिस देश के निवासी 'सचाई' की निगाह से आदर्श माने जाते थे, जिनके लिए विदेशी पर्यटकों ने लिखा था कि 'यहाँ कोई व्यक्ति अपने मकान में ताला नहीं लगाता और कोई चीज अगर कहीं गिर जाती है तो वहीं पड़ी रहती है', वहाँ आज चोरी, ठगी, धोखेबाजी के कारण भले आदमियों का जीवन-निर्वाह कठिन हो गया है। टंडन जी का जीवन और आचरण इस दृष्टि से हम लोगों के लिए एक उदाहरण है। वे वकालत के पेशे में चले गये थे, जिसको अधिकांश लोग झूठ और चालाकी का भंडार समझते हैं, पर उसमें भी उन्होंने सदा सत्यनिष्ठा का ही परिचय दिया। उसके पश्चात् भी उन्होंने जिस किसी क्षेत्र में कार्य किया, अपनी इसी प्रवृत्ति का परिचय दिया। ऐसे व्यक्ति के लिये 'राजर्षि' की पदवी दी जानी उचित ही थी।

स्वभाव और चरित्र की दृढ़ता—

देश और मातृभाषा की अधिकाधिक सेवा के साथ ही टंडन जी की एक बहुत बड़ी विशेषता उनकी अभूतपूर्व सादगी और अति सामान्य स्तर का रहन-सहन भी थी। उनको अकेले देखकर कोई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनजान व्यक्ति यह अनुमान नहीं लगा सकता था कि ये देश के प्रथम श्रेणी के नेता और हिंदी-साहित्य सम्मेलन जैसी देश-विदेशों में विख्यात संस्था के निर्माता हैं। इसका एक मुख्य कारण यही है कि आप अपनी कथनी और करनी में एकता रखने वाले व्यक्ति थे। इसलिए जो कुछ मुख से कहते थे या दूसरों को जैसा उपदेश करते थे; वैसा ही आचरण स्वयं करते थे। सन् १९०५ में स्वदेशी आंदोलन के समय यह कहा गया कि विदेश से आने वाली दानेदार चीनी कभी नहीं खानी चाहिए, क्योंकि उसे गाय-बैलों की हड्डियों की राख से धोया जाता है। उस समय अन्य अनेक लोगों के साथ आपने भी उसको व्यवहार में न लाने की प्रतिज्ञा की। अन्य लोग तो भारतवर्ष में ही वैसी दानेदार चीनी बनना आरंभ होने पर उसे खाने लग गये, पर टंडन जी ने जो एक बार उसके बजाय देशी खाँड़ अथवा गुड़ खाने की प्रतिज्ञा की, तो जीवन के अंत तक उसे पूरी तरह निबाहा। इस प्रतिज्ञा के फलस्वरूप उन्होंने कभी चीनी या उससे बनी मिठाइयाँ चखी ही नहीं।

इसी प्रकार जब गौ-रक्षा के लिए यह आंदोलन उठाया गया कि बूट-जूतों के लिए लाखों गायें काटी जाती हैं और बढ़िया क्रोम चमड़े के लिए तो जीवित गायों का चमड़ा उनको घोर कष्ट देकर उतारा जाता है, तो आपने चमड़े के जूते का भी त्याग कर दिया। तब से आजन्म आप सुतली के तले के जूते (रोप सोल) या अन्य प्रकार के बिना चमड़े की चप्पल आदि पहनते रहे। हाईकोर्ट में एक बड़े वकील की हैसियत से जाते हुए भी आप वही भद्दे से चप्पल आदि पहनते थे, जबकि अन्य वकील, बैरिस्टर वहाँ बड़े कीमती और चमचमाते बूट पहिनकर जाते थे।

स्वदेशी आंदोलन में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की प्रतिज्ञा करने पर आपने स्नान के साबुन का व्यवहार भी छोड़ दिया था और उसके स्थान पर मुलतानी या पिंडोल मिट्टी का व्यवहार करते थे। उस समय स्नान के साबुन प्रायः इंगलैंड से आते थे और उनमें चर्बी डाली जाती थी। आज भी सुनने में आता है कि बढ़िया किस्म के भारतीय साबुनों में भी चर्बी का कुछ भाग मिलाया जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

टंडन जी का धर्म-भाव ऐसी अशुद्ध चीज का प्रयोग करना कैसे सहन कर सकता था ? इसलिये आप स्वच्छता के लिए भारतीय प्रथा के अनुसार स्वयं मिट्टी का प्रयोग करते थे और दूसरों को भी उसका उपदेश देते थे। एक बार शांतिनिकेतन के डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी उनके यहाँ आकर ठहरे। भोजन करने के पश्चात् उन्होंने हाथ धोने के लिए साबुन माँगा, तो एक बच्चे ने उनको एक मिट्टी का टुकड़ा लाकर दे दिया और कहा—"बाबूजी साबुन की जगह इसी को काम में लाते हैं।" 'सुरुचि' का अधिक ध्यान रखने वाले द्विवेदी जी को यह बात सुनकर झेंप जाना पड़ा।

वैसे तो आपकी पोशाक हमेशा साधारण ही रही थी और आप आरंभ से ही स्वदेशी वेश-भूषा के पक्षपाती थे। फिर भी अदालत में वकील का कार्य करते हुए या नाभा-राज्य में मंत्री पद पर काम करते हुए आप अचकन, पायजामा का व्यवहार करते रहते थे। अन्य अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों या वकीलों आदि की तरह आपने कोट, पैंट, टाई आदि विलायती पोशाक का प्रयोग कभी नहीं किया। फिर जब से गांधी जी के अनुयायी बनकर राष्ट्रीय आंदोलन में सम्मिलित हो गए, तब से बहुत मामूली खद्दर के धोती-कुरते के सिवाय आपने कभी कुछ पहना ही नहीं। वह कुरता और धोती भी फटे-पुराने हों, तो इस बात की भी चिंता उन्होंने कभी नहीं की।

एक समय आपने देखा कि गाय को दुहते समय उसका बछड़ा दूध पीने के लिये बेहद कोशिश कर रहा है, परंतु अपनी माता का दूध नहीं पाता। यह दृश्य देखकर आपके हृदय में इतना कष्ट पहुँचा कि आँखों से आँसू बहने लग गये। उस दिन से आपने घी, दूध, मक्खन आदि का व्यवहार भी बंद कर दिया। अगर कभी आवश्यकता होती, तो केवल छाछ ले लेते थे। शहद को प्राप्त करने के लिए जिस प्रकार सैकड़ों मक्खियों की हत्या की जाती है, उसके पापांश से बचने के लिए उसका व्यवहार भी आपने छोड़ रखा था।

आप प्राकृतिक विधि के अनुकूल रहन-सहन के प्रेमी थे, इसलिये बजाय पके हुये खाद्य-पदार्थों के भिगोया हुआ गेहूँ, चना, मटर खाकर महीनों रह जाते थे। एक बार इसके कारण एक बड़ी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मनोरंजक घटना हो गई। सन् १९२८ में आप कलकत्ता गये और वहाँ हिंदी साहित्य की जड़ जमाने वाले विद्वान् स्वर्गीय बालकृष्ण भट्ट के पुत्र श्री लक्ष्मीकांत भट्ट के यहाँ पधारे। लक्ष्मीकांत जी ने उनके भोजन के लिये पूरी-कचौड़ी, कई तरह के साग, रायता बनवाये और बाजार से मिठाई भी मँगवाई। जब यह सब सामान एक थाल में सामने रखा गया, तो आपने कहा—"और कोई चीज तो नहीं है ?" भट्ट जी ने कहा—"हाँ, खीर भी बनवाई है, पर मैं चाहता था कि उसे मैं पीछे लाता।" आपने हँसते हुए कहा—"पर मुझे तो कुछ नई तरह की चीजें खाने का अभ्यास है।" भट्ट जी ने उत्तर दिया—"बहुत ठीक है, ये सब मिठाइयाँ कलकत्ते की मशहूर दुकानों की हैं और इनका बड़ा नाम है।"

तब आपने बताया—"ये सब चीजें मेरे काम की नहीं। मुझे तो चाहिए थोड़ा-सा भीगा हुआ गेहूँ, बिना नमक की दाल, मक्खन निकाली छाछ और गुड़ की एक डली।" इस पर भट्ट जी भी उनके सुर में सुर मिलाकर कहने लगे—"एक मुट्ठी घास और एक डलिया जौ का भूसा।" इस पर चारों ओर हँसी का वातावरण व्याप्त हो गया। आपने अपने बतलाये भोजन के पदार्थों के लाभों पर एक घंटा व्याख्यान दिया। पर भीगा हुआ गेहूँ तो तुरंत कैसे मिलता, तोता के लिए भिगोये हुए चना रखे थे। उनको गुड़ की एक डली के साथ खाकर टंडन जी प्रसन्न हो गये।

टंडन जी के घर में भोजन की सादगी के साथ ही ईमानदारी के नियम का पालन भी किया जाता था। जब सरकारी नियम के कारण बाजार में गेहूँ और चावल मिलना बंद था, तो अन्य जितना राशन मिलता, उसी से काम चलाया करते। अन्य लोगों की तरह ब्लैक मार्केट (चोर बाजार) से खरीदकर कोई चीज प्राप्त नहीं करते थे, क्योंकि उनकी निगाह में यह बेईमानी को बढ़ावा देना था। जब अनाज की कमी पड़ती, तो खुले बाजार से जौ-चना लेकर काम चलाया जाता। एक बार बिहार प्रांत के कुछ मंत्री आपके यहाँ आकर ठहर गये। घर में गेहूँ का आटा नहीं था। इसलिये रसोइया चिंता में पड़ गया कि क्या करे ? जब आपको इसकी खबर लगी, तो आपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कहा कि सब लोग जौ-चने की रोटी ही खायेंगे। मंत्रीगण इतने प्रसिद्ध नेता की इस निरभिमानता और ईमानदारी को देखकर चकित रह गए।

एक अन्य अवसर पर घर में थोड़ा-सा चावल था और कुछ अतिथि आ गये। उन्होंने आलुओं के साथ उन्हीं चावलों को पकवा कर सबका सत्कार कर दिया। वैसे आप अतिथि-सेवा को अपना धर्म-कर्तव्य मानते थे और उनके खाने, पीने, सोने, स्नान आदि की सुव्यवस्था का पूरा ध्यान रखते थे। पर उनके लिए भी आप चोर बाज़ार से कोई सामान खरीदने को तैयार नहीं होते थे। क्योंकि सभी लोग प्रकट में इसकी निंदा करते थे और इसे भ्रष्टाचार का कारण बतलाते थे। पर जहाँ अधिकांश व्यक्ति मुँह से ही इसकी निंदा करके रह जाते थे, टंडन जी सचमुच उसका बहिष्कार करते थे।

इस संबंध में उनकी 'नैतिकता' यहाँ तक पक्की थी कि जब एक बार अपने पुत्र के यहाँ गये और भोजन के समय उनको मालूम हुआ कि इसके यहाँ अधिकांश खाद्य पदार्थ चोर-बाजार से ही आते हैं, राशन का घटिया अन्न उनको पसंद नहीं, तो वे उसके यहाँ से बिना खाये ही लौट आये।

श्री गोविंददास जी ने उनके संस्मरण लिखते हुए बताया है कि 'जब टंडन जी दिल्ली में ठहरे थे, तो पेंसिल बनाने के एक भारतीय कारखाने का प्रतिनिधि अपने कारखाने की कुछ पेंसिलें उनको भेंट करने लाया। टंडन जी बहुत देर तक पेंसिलों को देखते रहे और उनमें से कुछ को छाँटते भी रहे। जब उन्होंने पेंसिलों को छाँट लिया तो उनकी कीमत पूछी। प्रतिनिधि तो पेंसिलें भेंट करने आया ही था, वह उनकी कीमत क्या बताता ? पर टंडन जी बिना कीमत चुकाए पेंसिलों को लेने के लिये राजी नहीं हुए। बड़ी बहस के बाद उन्होंने कीमत दो रुपये दे ही दिये।' कुछ उपस्थित लोगों को यह कार्य कुछ अटपटा-सा लगा। पेंसिलें भेंट करने वाला व्यक्ति जिस श्रद्धाभाव से उनकी भेंट करने आया था, सामान्य दृष्टिकोण से उनको स्वीकार करने में कोई दोष नहीं माना जाता। सभी नेताओं और उच्च अधिकारियों के पास ऐसी भेंट की वस्तुएँ कभी-कभी भेजी जाती हैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और उनको स्वीकार कर लेना शिष्टाचार का एक अंग माना जाता है। पर सत्य और ईमानदारी के कट्टर उपासक टंडन जी जानते थे कि इस प्रकार के शिष्टाचार में भी गुप्त अभिप्राय कुछ अप्रत्यक्ष लाभ उठाने का होता है। फिर कितने ही बार तो देने और लेने वाले इसी बहाने हजारों रुपये का माल दे और दिला देते हैं, जिसका वास्तविक उद्देश्य अप्रत्यक्ष रूप से रिश्वत देना ही होता है। इसलिए इस आदर्श की छाप दूसरों पर डालने के लिए यदि सामान्य भेंट को भी अस्वीकार कर दिया जाय, तो वे इसे दोष नहीं मानते थे।

आप इस प्रकार के नियमों की कठोरता का व्यवहार बाहरी लोगों के साथ ही नहीं करते थे, वरन् अपने घर के भीतर भी आप इस तरह की बातों का पूरा ध्यान रखते थे। आपके बड़े लड़के जब मैट्रिक में पढ़ रहे थे, उस समय यह नियम था कि १६ वर्ष से कम आयु का लड़का परीक्षा में नहीं बैठ सकता था। आपके पुत्र की आयु १६ वर्ष से कुछ कम होती थी। यदि आप लिख देते कि परीक्षा में बैठने के समय उसकी आयु १६ वर्ष की हो जायगी, तो उसे परीक्षा में बैठने की अनुमति मिल जाती। पर आपने कोई गलत बात लिखना स्वीकार न किया और कहा—"यदि वह इस वर्ष परीक्षा में नहीं बैठ सकता, तो अगले वर्ष दे लेगा। किंतु मैं झूठ नहीं लिख सकता।" पुत्र को एक वर्ष तक घर में बैठना पड़ा।

हम यह जानते हैं कि इस प्रकार के सिद्धांत और ऐसा त्यागी स्वभाव इस जमाने में 'प्रशंसनीय' नहीं समझा जाता। अगर दो व्यक्ति उनको 'आदर्श ईमानदार' बतलायेंगे तो अट्ठानवे 'सनकी' या 'बेअकल' कहने वाले मिलेंगे। ठीक है, जो लोग दूसरे के धन को मार लेने में ही होशियारी समझते हैं और जब तक दस-बीस बार तकाजा न हो, तब तक देने का नाम नहीं लेते, उनके लिये तो ऐसी निस्पृहता एक निकम्मी चीज ही जान पड़ेगी। इस प्रकार के व्यक्ति 'छोटे' और अशिक्षित लोगों में ही नहीं पाये जाते, वरन् साधन-संपन्न और समाज में बड़े बनने वालों में और भी ज्यादा पाये जाते हैं। छोटे व्यक्ति को तो यह भय भी रहता है कि अगर भेद खुल गया तो उसकी लोग भर्त्सना करेंगे और शायद कुछ दंड भी सहन करना पड़े। पर बड़े

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आदमियों को भरोसा रहता है कि उन पर जल्दी कोई संदेह नहीं कर सकता और करेगा भी, तो जल्दी कहने का साहस नहीं कर सकेगा और अंत में कोई ऐसा मामला पैदा हो भी गया तो वे साम-दाम-दंड-भेद से किसी प्रकार उससे निबट ही लेंगे।

ऐसी भ्रष्टाचारी दुनिया में जिसमें 'भले' या 'सफेदपोश' कहलाने वाले निर्लज्जतापूर्वक रुपया कमाने के लिए धोखा-धड़ी का व्यवहार करने में संकोच नहीं करते, टंडन जी जैसे जीवनमुक्त पुरुष ही प्रकाश-स्तंभ का काम करते थे। उनको देखकर लोगों को स्मरण होता रहता था कि संसार में सचाई का भी कुछ महत्त्व है। वह ऐसी चीज है, जो चिथड़ों में लिपटी रहने पर भी दूर-दूर तक सम्मान की पात्र समझी जाती है। जबकि किसी बेईमान को धन होने पर भी दूसरों से निगाह चुरानी पड़ती है। वहाँ 'सच्चाई का धनी' सदैव मस्तक ऊँचा करके चलता है। इस समय संसार में धन की कितनी ही पूजा क्यों न होती हो, पर उससे शांति और संतोष की प्राप्ति नहीं हो सकती। ये 'महान् संपदायें' पराई वस्तु को हराम समझने वाले को ही प्राप्त होती हैं।

भारतीय संस्कृति के उन्नायक—

"टंडन जी का स्वप्न था कि स्वाधीन भारत में पश्चिम का अंधानुकरण न किया जाय, बल्कि अपने देश की संस्कृति की सुरक्षा और उसे पुनर्जीवित करने का काम सरकार को करना चाहिए। वे चाहते थे कि देश में ऐसा वातावरण तैयार किया जाय, जिससे भारत की प्रतिष्ठा संसार में पुनः स्थापित की जा सके। इस आशा को लेकर उन्होंने 'भारतीय-संस्कृति सम्मेलन' की स्थापना कराई।

'भारतीय संस्कृति के संबंध में वे सदैव बुद्धिवादी दृष्टिकोण के समर्थक थे। उनका कहना था कि भारतीय संस्कृति बौद्धिक ही है। जहाँ बुद्धि नहीं, वहाँ युक्ति नहीं, और जहाँ युक्ति नहीं, वहाँ भारतीय संस्कृति नहीं तथा धर्म भी नहीं। इस संबंध में वे बहुत बार बृहस्पति स्मृति का एक श्लोक पढ़ा करते थे, जिसका अभिप्राय यह था कि 'शास्त्र निर्णय की अपेक्षा युक्ति द्वारा धर्म का निर्णय करना चाहिए। जिस धर्म का निर्णय शास्त्र मात्र से किया जाता है, वह ठीक नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उनकी दृष्टि में शास्त्र-सम्मत और बुद्धि की कसौटी पर आँका गया धर्म ही सही धर्म हो सकता है।'

वास्तव में बीच के अंधकार-युग में और खास कर मुसलमानी-काल में हिंदू धर्म के अस्त-व्यस्त हो जाने पर, कुछ स्वार्थी लोगों ने हिंदू-धर्म और संस्कृति में कितनी ही हानिकारक प्रवृत्तियाँ सम्मिलित कर दी। 'शास्त्राज्ञा' को आँखें बंद करके मानने का उपदेश भी ऐसे ही लोगों ने दिया है। सचाई को जाँच-पड़ताल का भय कब हो सकता है ? फिर दूसरी बात है कि कोई धार्मिक नियम ऐसा नहीं, जो सब अवस्थाओं और प्रत्येक समय में एक-सा रह सके। लोकमान्य तिलक ने 'गीता रहस्य' में बतलाया है कि साधारण सामयिक नियमों की तो क्या बात, सत्य, अहिंसा, क्षमा, दया भी ऐसे धर्म हैं, जिनमें कभी श्रेष्ठ व्यक्ति को भी विपरीत आचरण करना पड़ता है और उसी को धर्मानुकूल माना जाता है। पर इसका निर्णय तभी किया जा सकता है, जब हम समस्त परिस्थिति पर स्वतंत्र बुद्धि द्वारा व्यापक रूप से विचार करके कर्तव्य का निर्धारण करें। इसलिये यदि टंडन जी ने धर्म का निर्णय करने के लिए बुद्धि का प्रयोग आवश्यकीय बतलाया तो उनका यह कथन हिंदू-शास्त्रों में वर्णित उच्च सिद्धांतों के अनुसार ही है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में भारतीय संस्कृति का अधिकांश में अभाव होने के कारण वे उसे उपयुक्त नहीं मानते थे। विशेषकर आजकल के विद्यार्थियों के फैशन-प्रेम और विलासितापूर्ण आदतों को देखकर वे इसके और भी विरोधी बन गये थे। वे चाहते थे कि प्राचीन गुरुकुल प्रणाली और आधुनिक शिक्षा का समन्वय करके भारतवर्ष के उपयुक्त शिक्षा-विधि का प्रचार किया जाय। इसके परीक्षण के तौर पर उन्होंने प्रयाग में नगर से बहुत दूर 'विद्यापीठ' की स्थापना भी की थी, जिसमें सम्मेलन की परीक्षाओं की पढ़ाई के साथ-साथ विद्यार्थियों द्वारा खेती, फलोत्पादन, ग्रामोद्योग आदि का कार्य करते हुए, स्वावलंबी जीवन व्यतीत करने की व्यवस्था की गई थी। यद्यपि टंडन जी पर कार्यभार की अधिकता और साधनों की कमी से यह संस्था अधिक समय तक ठीक-ठीक कार्य न कर पाई,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो भी इसने एक उत्तम आदर्श जनता के सामने रखा। वर्तमान शिक्षा-पद्धति की त्रुटियों की आलोचना करते हुए टंडन जी ने जो विचार समय-समय पर प्रकट किये थे, उनका सारांश इन शब्दों में मिल सकता है—

"वर्तमान शिक्षा-पद्धति में शिक्षक और विद्यार्थियों में अच्छे संबंध स्थापित नहीं हो सकते। जब तक शिक्षक इस बात पर विचार न करें कि विद्यार्थी के प्रति उसका क्या नैतिक कर्तव्य है, तब तक शिक्षा सफल नहीं हो सकती। इस समय ऋषि-मुनियों की तरह शिक्षा-क्षेत्र में आदर्श उपस्थित करने वाले विशिष्ट-शिक्षकों तथा आचार्यों की आवश्यकता है, जो विद्यार्थियों से यह कह सकें कि जो अच्छे काम हमने किये हैं, उनसे शिक्षा लो और उन कामों की तरफ ध्यान मत दो, जो भूल में हमसे हो गये हैं। विद्यार्थी अवस्था से छात्रों को अपना जीवन विलासी बनाने के बजाय कठोर साधना और तपस्या का बनाना चाहिए। केवल अपनी माँग सँवारते रहने और हैट-बूट की चिंता करने में सारा समय बर्बाद कर देने वाले विद्यार्थी, कभी देश के गौरव नहीं बन सकते।"

विद्यार्थी और युवक ही देश की प्रगति के आधार होते हैं। आज संसार के विद्यार्थियों के साथ भारत का छात्र वर्ग भी जाग्रत् हो रहा है, पर उचित दिशा का ज्ञान न होने से वह ऐसे अनेक कार्यों में अपनी शक्ति का अपव्यय कर रहा है, जिनसे न उनका हित हो सकता है और न समाज का। विद्यार्थियों में सिनेमा, धूम्रपान आदि की बुराई दिन पर दिन भयंकर वेग से प्रविष्ट हो रही है और इसके परिणामस्वरूप उनमें अश्लीलता और चरित्रहीनता की भी लगातार वृद्धि होती जा रही है। खेद है कि वे विदेशी युवकों के दोषों की नकल करने को तो तत्पर रहते हैं, पर उनके सत्साहस आदि गुणों की तरफ ध्यान नहीं देते। टंडन जी ने इस त्रुटि को बहुत पहले पहचान लिया था और इसीलिये सम्मेलन की परीक्षाओं और तत्संबंधी विद्यालयों की स्थापना द्वारा इसे यथाशक्ति दूर करने का प्रयत्न किया था। पर विद्यार्थियों की वर्तमान उच्छृंखलता और सच्चरित्रता का कोई मूल्य न समझने की प्रवृत्ति को देखकर विवश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होकर कहना पड़ता है कि इस संबंध में टंडन जी जैसे महानुभावों के प्रयत्न बहुत कम कारगर हुए हैं। इसलिये अब भी देश और समाज के हितैषियों का यह परम कर्तव्य है कि वे अपनी शक्ति और साधनों का प्रयोग भारतीय संस्कृति के अनुकूल शिक्षा, विद्यार्थियों को दिलाने के लिये करें।

सांप्रदायिकता का मिथ्या दोषारोपण—

भारतीय संस्कृति और देश की अखंडता के अनन्य उपासक होने के कारण आप कुछ मुस्लिम लीगी नेताओं की आँखों में खटकने लगे थे। सन् १९१६ की लखनऊ कांग्रेस में जब हिंदू-मुसलमानों के लिये पृथक् निर्वाचन-क्षेत्रों का प्रस्ताव पास किया गया, तभी आपने उसका जोरों से विरोध किया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि—यह भारतीय राष्ट्रीयता के लिए हानिकारक है। जब लार्ड माउंट बेटन ने देश को हिंदुस्तान तथा पाकिस्तान—इन दो भागों में बाँटने की योजना बनाई, तब भी आपने उसके विरुद्ध आवाज उठाई और कहा—"इस योजना से हमारे पवित्र आदर्शों और उद्देश्यों को गहरा आघात पहुँचेगा। अगर अभी तक हिंदुस्तान ने अपने प्राणों की आहुति देकर स्वतंत्रता की ज्योति प्रज्ज्वलित रखी है, तो कोई कारण नहीं कि हम पंजाब तथा नोआखाली के मुट्ठी भर गुंडों के डर से अपने देश को बट जाने दें।" जब मुसलमान नेताओं ने उत्तर प्रदेश में भी अपने अनुयायियों को पंजाब और बंगाल की-सी गुंडागर्दी करके अपनी धाक ज़माने को भड़काया, तो आपने सार्वजनिक भाषणों में कहा—"उत्तर प्रदेश को पंजाब या बंगाल बनाने का कुचक्र रचने वाले मुस्लिम नेताओं के कारनामों के प्रति प्रादेशिक सरकार पूर्ण रूप से सावधान है। वह उनके षड्यंत्रों का दमन करने लिए हर समय सन्नद्ध है।"

टंडन जी के इन निर्भीक उद्गारों को सुनकर, उनकी हिन्दी-प्रचार की तत्परता तथा ऋषियों का-सा वेश देखकर, कट्टर मुसलमानों में यह भावना पैदा हो जाती थी कि टंडन जी सांप्रदायिक पक्षपात करने वाले हैं और वे अपने मन में मुसलमानों के प्रति विरोध-भाव रखते हैं। पर टंडन जी ने कभी ऐसे आक्षेपकर्ताओं की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बातों पर ध्यान नहीं दिया और वे अपना काम बिना लड़े-झगड़े करते चले गये। अंत में परिणाम यह हुआ कि विरोधी स्वयं ही चुप हो गये, क्योंकि टंडन जी ने मुसलमान जाति का कभी विरोध नहीं किया। उन्होंने उन्हीं मुसलमान प्रचारकों की निंदा की और विरोध किया, जो हिंदुओं के विरुद्ध विष वमन करके देश में फूट फैलाया करते थे।

भारतवर्ष के मुसलमानों की समस्या वास्तव में बड़ी जटिल है। उनको आरंभ से ही यह शिक्षा दी जाती है कि वे संसार भर के मुसलमानों को धर्म-बंधु मानकर सदैव उनके हित-साधन के लिए सचेष्ट रहें। वे सबसे अधिक आदर-सम्मान अरब की भूमि का करते हैं, जहाँ मुहम्मद साहब का आविर्भाव हुआ था। इस प्रकार की भावनाओं और समस्त गैर-मुस्लिमों को 'काफिर' समझने की दूषित मनोवृत्ति के कारण वे भारतवर्ष में रहते और यहीं का अन्न जल खाते-पीते रहने पर भी, यहाँ के निवासियों को गैर ही समझते रहते हैं। ऐसी दशा में कुछ हिंदू भी अगर उनको बाहरी व्यक्ति मानने लगें और उनके साथ वैसा ही व्यवहार करें, तो उन्हें दोषी नहीं बतलाया जा सकता।

अविश्वास से अविश्वास ही उत्पन्न होता है। अधिकांश हिंदू-नेता, अब तक मुसलमानों को 'अल्पसंख्यक' मानकर उनके साथ बड़ी रियायत का बर्ताव करते रहे हैं। पर उन्होंने ऐसी रियायत का अर्थ सदैव उलटा लगाया और हिंदुओं का तरह-तरह से विरोध ही करते रहे और यथाशक्ति हानि पहुँचाने में तत्पर रहे। ऐसी अवस्था में यदि टंडन जी, मालवीय जी, स्वामी श्रद्धानंद आदि महापुरुषों ने हिंदुओं के हितों की रक्षा के लिये आवाज उठाई और उनको जाग्रत् तथा संगठित होने की चेतावनी दी, तो यह स्वाभाविक ही था। पर फिर भी कोई निष्पक्ष और न्यायशील व्यक्ति इन पर यह दोषारोपण नहीं कर सकता कि इन्होंने द्वेषपूर्वक मुसलमानों को दबाने या उनको उचित अधिकारों से वंचित करने का प्रयत्न किया था। टंडन जी का चरित्र इस दृष्टि से सर्वथा निर्मल और सराहनीय था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक बात और भी सुनने में आई है, जिससे टंडन जी को 'सांप्रदायिक' कहने वाले विरोधियों का स्पष्टतः खंडन हो जाता है। वे भीष्म पितामह के बड़े भक्त थे तथा कहा करते थे कि जिस तपस्वी महामानव ने सब तरह से स्वार्थ त्याग कर देश तथा समाज की रक्षा के लिये इतना बड़ा त्याग किया, उसकी स्मृति को स्थिर रखना प्रत्येक सभ्यताभिमानी का कर्तव्य है। वे तर्पण करने को भी स्मृति-रक्षा का ही एक रूप मानते थे और इस दृष्टि से भीष्म-पितामह को नित्य-प्रति स्नान करते हुए जल प्रदान करते थे। टंडन जी का यह कार्य शास्त्रानुकूल भी था, क्योंकि पंडित लोग पितृ पक्ष (कनागतों) में जो 'तर्पण' कराते हैं, उसमें भी भीष्म पितामह के लिए जल दिया जाता है। पर टंडन जी की समतापूर्ण बुद्धि का परिचय तो तब मिलता है, जबकि भीष्म-पितामह के साथ ही वे अपने मुसलमान गुरु (मौलवी) के नाम पर भी तर्पण करते थे, क्योंकि वे निस्संतान मर गये थे। इतने पर भी यदि कोई उन्हें सांप्रदायिकता का दोषी बतलाये, तो उनकी बुद्धि पर तरस ही खाना पड़ेगा।

'आधुनिक प्रगतिशीलता' के पक्षपातियों का विरोध—

एक और अन्य विचारधारा के लोग भी टंडन जी की सांस्कृतिक गतिविधियों पर संकीर्णता अथवा सांप्रदायिकता का दोष लगाया करते थे। पर वे ऐसे व्यक्ति हैं, जो भारतीय समाज की वास्तविक स्थिति पर ध्यान न देकर केवल कुछ 'नये विचारों' की दुहाई देते रहते हैं। हम दूरदर्शी मनीषियों की भावी-संसार संबंधी कल्पनाओं से परिचित हैं और यह पूर्णतः स्वीकार करते हैं कि संसार में से 'धर्म', 'भाषा', 'राजनीति', 'अर्थनीति' के भेदभाव जितने अधिक मिट सकें और इन सभी विषयों में एकता और साम्य की जितनी अधिक वृद्धि हो सके, उतना ही मानव-जाति के लिए कल्याणकारी है। टंडन जी अथवा मालवीय जी जैसे महापुरुष इस तथ्य को न समझते हों, यह भी कदापि नहीं कहा जा सकता, पर वे वस्तुस्थिति को आँखों से ओझल नहीं कर सकते थे। भावी संसार की एकता का चित्र अभी मुट्ठी भर व्यक्तियों को छोड़कर कल्पना लोक की ही चीज है, और भारत के मुसलमान ही नहीं, योरोप और अमेरिका की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वैज्ञानिक-सभ्यता वाली जातियाँ भी अभी दूसरों का शोषण और अपहरण करने में ही प्रयत्नशील दिखाई पड़ती हैं। ऐसी स्थिति में भारतीय-संस्कृति की रक्षा के लिए टंडन जी के विचारों को स्पष्ट करते हुए सेठ गोविंददास जी ने ठीक ही लिखा है—

"आजकल दो नये शब्द निकले हैं—'प्रोग्रेसिव' (प्रगतिवादी) तथा दूसरा 'नान प्रोग्रेसिव' (अप्रगतिवादी)। उनके अनुसार अगर अपनी संस्कृति, अपनी भाषा से किसी को प्रेम हो और जो भारत को इसके अनुरूप देखना चाहता हो, वह 'अप्रगतिवादी' कहलाता है। अपने देश की मिट्टी से, उसकी सभ्यता से, संस्कृति से, उसके धर्म और उसकी भाषा से प्रेम रखना यदि अप्रगतिवादी विचारधारा है, तो मैं जानना चाहूँगा कि आखिर स्वाधीनता और स्वदेश-प्रेम का अर्थ क्या है ? यह सब नहीं हों, तो भारत ही क्या, किसी भी देश का आज के स्वतंत्र-विश्व में अस्तित्व ही नहीं रहना चाहिए। प्रगतिशीलता के नाम पर जो लोग हमारी सभ्यता, भारत की पुरातन संस्कृति के विरोधी हैं, वे ही संप्रदायवादी हैं। यदि भावी भारत का निर्माण, भारतीय आदर्शों को स्थिर रखकर करना है, तो हमको अपनी संस्कृति की विशेषताओं की रक्षा करनी ही होगी और यही प्रयत्न टंडन जी आजीवन करते रहे।'

यद्यपि सेठ गोविंददास जी ने जो कुछ लिखा है, वह भारतीय जनता के बहुमत के अनुकूल ही है, फिर भी विद्वानों और नेताओं का एक ऐसा दल संसार में मौजूद है, जो इस प्रकार की जातीयता को बढ़ावा देने के विरुद्ध है। उनका कथन है कि भावी जगत् का निर्माण मानव-मात्र की एकता के आधार पर होगा और जब तक संसार भर में धर्म, जाति, भाषा, आचार-विचार, शिष्टाचार आदि के नियमों में अधिक से अधिक एकरूपता न लाई जायेगी, तब तक शांति, सुरक्षा, प्रगति की आशा सर्वथा निर्मूल है।

इसलिये साधारण व्यक्तियों की बात छोड़ भी दें, तो संसार की गतिविधि को समझने वाले विद्वानों और सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को तो धर्मों और संस्कृतियों के मतभेदों पर जोर नहीं ही देना चाहिए। उनको तो जन-समुदाय की मनोवृत्ति को हर प्रकार से विश्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की एकता, शांति और सहयोग की ओर ही आकर्षित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

राष्ट्रीयता और अंतर्राष्ट्रीयता में समन्वय करने की यह समस्या वास्तव में टेढ़ी है। हमारे ऋषि-मुनियों ने तो आदिकाल से 'वसुधैव कुटुंबकम्'' के सिद्धांत की घोषणा कर रखी है। साथ ही वे 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' कहकर मनुष्य मात्र को अपना आत्मीय भी बतलाते थे। किसी-किसी भावुक विद्वान् ने तो यहाँ तक लिख दिया है कि 'भ्रातरो मानवा सर्वे स्वदेशो लोकत्रयम्' मनुष्य-मात्र हमारे भाई हैं और तीनों लोक हमारा राष्ट्र है।''

पर आज तक कोई भी शासक अथवा राष्ट्र इस सिद्धांत के अनुसार व्यवहार न कर सका। यद्यपि भारत जैसे दो-चार राष्ट्र अन्याय, अत्याचार और पारस्परिक कलह के विरुद्ध हैं और वे अपनी तरफ से सबके साथ भाई-चारे का ही व्यवहार करना चाहते हैं, पर उनको भी विवश होकर आक्रमणकारी के विरुद्ध शस्त्र-ग्रहण करना पड़ता है। इसलिये जब तक किसी उपाय से या संयोगवश परिस्थितियाँ बदल नहीं जातीं, तब तक आपत्ति धर्म के रूप में ही सही, हमको अपनी जनता को आत्म-रक्षा के लिए प्रेरणा देनी ही पड़ेगी। टंडन जी का भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देना, इसी मनोवृत्ति का परिचायक था, जिसका विरोध हम वर्तमान दशा में नहीं कर सकते।

टंडन जी के चरित्र पर ध्यान देने से मालूम होता है कि वे ऐसी सस्ती वाह-वाही से लाभ उठाने की भावना से बहुत दूर रहते थे। वे अच्छी तरह देख रहे थे कि इस संक्रांति काल में 'पुरातनवादी' बनने से अनेक बड़े नेताओं के विरुद्ध खड़ा होना पड़ेगा और उसके परिणामस्वरूप अपनी स्थिति और ख्याति पर भी विपरीत प्रभाव पड़ना संभव है। फिर भी उन्होंने जिस बात को सत्य समझा, उसका पालन करना और उसकी रक्षा के लिए हानि-लाभ की परवाह न करना अपना परम कर्तव्य माना। जिस प्रकार उन्होंने अपनी आवश्यकताओं को कम से कम करके धन का सदैव त्याग किया, उसी प्रकार ख्याति के लोभ से भी बराबर बचते रहे। सन् १९६१ में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जब भारत सरकार ने उनको एक उच्च उपाधि प्रदान की, तो उन्होंने अपने एक मित्र को लिखा था।

"मुझे उतार-चढ़ाव की उपाधियाँ देने का सरकारी क्रम अच्छा नहीं लगता। सुमित्रानंदन पंत को छोटी उपाधि दी गई और मुझे ऊँची उपाधि मिली। यह सच है कि मैं आयु में बड़ा हूँ और पुराना कार्यकर्ता भी हूँ, परंतु यह मैं जानता हूँ कि मुझे जब लोग भूल जायेंगे, तब भी सुमित्रानंदन पंत की कविता पढ़ी जायेगी। जनता अपने आदर के पात्रों को समय-समय पर स्वयं पहचान लेती है।

ऐसे निर्लोभी थे टंडन जी, सांसारिक धन और मान की तरफ से। वास्तव में यही भारतीय संस्कृति के स्थापक ऋषि-मुनियों की परंपरा थी। इस दृष्टि से उनको दी गई 'राजर्षि' की पदवी सार्थक ही जान पड़ती है। वे आजन्म इसी आदर्श का पालन करते रहे और भारतीय संस्कृति एवं हिंदी भाषा की हितकामना करते हुए १ जुलाई, १९६२ को शरीर त्याग के अवसर तक उन्होंने ये ही शब्द कहे—

"आज हिंदी-संविधान द्वारा राज्य-भाषा बन जाने पर भी अपने मौलिक अधिकारों से वंचित हैं। पर वह दिन भी आयेगा, जब काशी से कन्याकुमारी तक और गुजरात से नेफा की पहाड़ियों तक उसकी गरज सुन पड़ेगी, क्योंकि वही ऐसी भाषा है, जिसमें हमारे विशाल देश के कोटि-कोटि निवासियों को एक सूत्र में बाँधने की शक्ति है।"

❐ ❐

मूल्य–तीन रुपये

युगान्तर चेतना प्रेस शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तरांचल)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

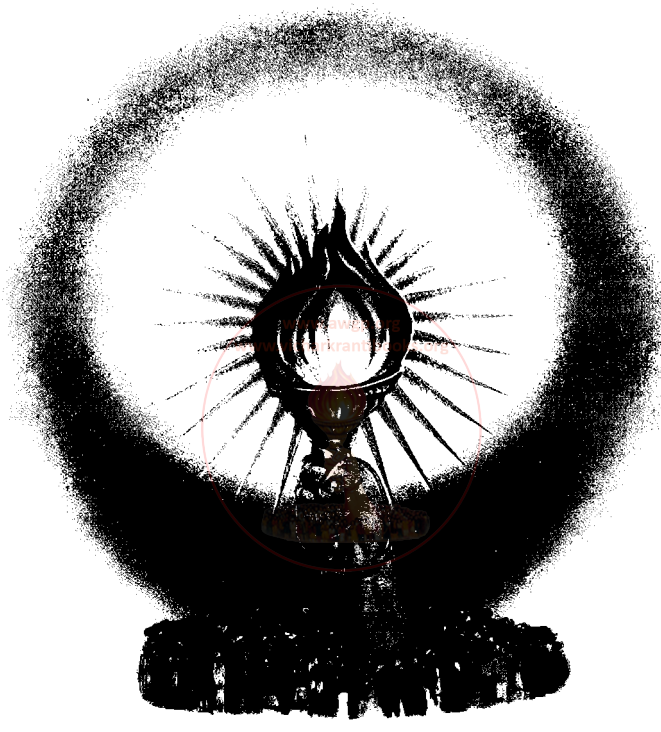

मूल्य- तीन रुपया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org